श्री निजानन्द आश्रम इन्चोली

(एक नजर)

चमनलाल सलूजा "महामंत्री"

बात सन् १९७२ की है श्री निजानन्द आश्रम इन्चोली के मन्दिर प्रांगण में श्री बीतक साहब की समाप्ती पूजन के सिलसिले में बहुत सा सुन्दर साथ बैठा हुआ था। उसमें समाज के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे, जो पंजाब, हरयाणा देहली तथा उत्तर प्रदेश से आए थे। बात चल निकली परमहस महाराज श्री रामरत्न दास जी की। पूज्य महाराज श्री जी अकेले अपने सतगुरु महाराज का भण्डारा बड़ी धूम-धाम से प्रत्येक वर्ष शेरपुर में किया करते थे और हम उनके हजारों अनुयायी हैं, विशेष रूप से उत्तर भारत के लगभग प्रत्येक प्रणामी परिवार में उनके प्यार की ज्योति प्रकाशमान है, क्या हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं कि हम लोग अपने सतगुरु महाराज के नाम का भण्डारा कर सकें? जबकि उनको नश्वर शरीर छोड़े हुए लगभग आठ वर्ष बीत गए हैं। यह ठीक है कि आदरणीय एच० के० एल० जी व्यक्तिगत रूप से हर वर्ष उनकी याद मनाते हैं जहां पर कि महाराज जी ने अपना शरीर छोड़ा था परन्तु हम सुन्दर साथ का भी तो कोई फर्ज है कि सामूहिक रूप से उनकी याद मनाई जाए।

उत्साहपूर्ण वातावरण में बड़े हर्षोल्लास तथा जयकारों की गूँज में निश्चय हुआ कि अगले वर्ष महाराज श्री जी की धाम गमन तिथि पर श्री श्री १०८ अखण्ड प्रायण रख कर उनके भण्डारे का शुभारम्भ किया जाए और इसकी सारी व्यवस्था का उत्तरदायित्व पूज्य भाई श्री जगदीशचन्द्र जी आहूजा को सौंपा गया।

सुन्दर साथ के सहयोग से सन् १९७३ में बड़ी धूमधाम से इन्चोली के मन्दिर प्रांगण में श्री श्री १०८ अखण्ड प्रायण का शुभारम्भ किया गया। उस समय इन्चोली का मन्दिर एक साधारण कमरे में था, जिसके चारों ओर ऊँची-नीची खाइयां छः-छः, आठ-आठ फिट गहरे गड्ढे थे, रात के सन्नाटे में जंगली जानवरों की डरावनी आवाजें आती थीं जिससे भय लगता था, परन्तु धन्य है वह चोली गांव का सुन्दर साथ जोकि आए हुए सुन्दर साथ

Nijanand App

की रक्षा के लिए रात-रात भर जाग कर पहरा देते थे, फावड़े और टोकरियां लेकर सुन्दर साथ के लिए रास्ते बनाते, लगातार १५ दिन तक भाग-भाग कर गांव वालों ने सुन्दर साथ की सेवा की, अपना तन मन धन सुन्दर साथ के चरणों में अर्पण कर दिया, इसी के लिए स्वामी जी ने कहा है कि "नहीं कोई सुख इन सेवा समान, जो दिल सानुकूल करे पहचान" फिर अखण्ड पाठों का समाप्ति पूजन सतगुरु महाराज के प्रति धर्म गोष्ठी तथा फिर भण्डारे की पूर्व रात्रि को सुन्दर साथ की प्रतीक्षा की घड़ी, अर्थात् इन्द्र देवता का कोप, आंधी, तूफान, बरसात रात भर वर्षा होती रही, प्रातः भी वर्षा. बैठना तो दूर खड़े होने का भी स्थान नहीं रहा परन्तु ज्यों-ज्यों आंधी एवं वर्षा की गति बढ़ती थी त्यों-त्यों सुन्दर साथ के भजन, कीर्तन एवं जयकारों की ध्वनि गूंज उठती, सुन्दर साथ एक दूसरे की सहायता कर रहा था। कोई फावड़ा लेकर पानी निकाल रहा था, कोई टोकरी सर पर उठाए मट्टी डाल रहा था, कोई भाग भाग कर सुन्दर साथ का सामान भीगने से बचा रहा था. कोई टिमटिमाते दियों की रोशनी से सुन्दर साथ को रास्ता दिखा रहा था। रात्रि के पश्चात् सवेरा हुआ, मन्दिर प्रांगण में बैठे सुन्दर साथ के प्यार का उमड़ता सागर, एक दूसरे के प्रति सेवा - भाव, एवं उत्साहपूर्वक वातावरण में श्री कीकू भाई जी डिसाई (अहमदाबाद) की अध्यक्षता में ३१ सदस्यों का एक ट्रस्ट गठन किया गया। प्रत्येक ट्रस्टी ने श्री राज जो महाराज के समक्ष सतगुरु महाराज के चरणों का आसरा लेकर प्रतिज्ञा की कि वह सच्ची निष्ठा से बिना किसी निजी स्वार्थ के धर्म, समाज, आश्रम तथा सुन्दर साथ की सेवा करेगा। इसके अतिरिक्त आश्रम की प्रगति एवं सुन्दर साथ की सुविधा के लिए सुन्दर साथ ने एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर धन से सेवा की। इसके पश्चात् श्री राज जी महाराज की शोभा यात्रा, झण्डारोहण और वर्षा की बरसती बूंदों में सुन्दर साथ ने खड़े खड़े हाथों में भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया। अन्त में पुरनम आंखों एवं रुंधे हुए गलों से एक दूसरे को प्रणाम करते गले मिलते सुन्दर साथ एक दूसरे से विदा हुए।

इस प्रकार हर वर्ष सतगुरु महाराज जी के नाम का भण्डारा होने लगा। दर्शनार्थ आने वाले सुन्दर साथ की संख्या बढ़ती चली गयी. पंजाब, हरयाणा, हिमाचल, देहली, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र से सुन्दर साथ दर्शन करने आते हैं। पहले यह भण्डारा थोड़े से सुन्दर साथ के सहयोग से शुरू किया गया था, अब

Nijanand App

इसका रूप बहुत विशाल हो गया है। भारत के कोने-कोने से बहुत बड़ी संख्या में सुन्दर साथ सतगुरु महाराज जी के चरणों में अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पण करने इन्चोली आश्रम में आते हैं। यह निश्चय हो चुका है कि जब तक कालमाया के ब्रह्माण्ड में यह धरती और आकाश रहेंगे, इन्चोली आश्रम में सतगुरु महाराज जी के नाम का भण्डारा श्री १०८ अखण्ड पारायण से आरम्भ होता रहेगा।

पिछले सात वर्षों में आश्रम ने जो प्रगति की हैं, उसका थोड़ा सा विवरण इस प्रकार है :—

१—मन्दिर

चोली आश्रम का मन्दिर पहले एक छोटे से और साधारण कमरे में था, अब उसका रूप बहुत विशाल हो गया है, मन्दिर का विशाल भवन, चारों ओर बरामदा, दूसरी भूमि पर ठहरने के कमरे, तीसरी भूमि पर बैठने का सुन्दर स्थान और इसे सुन्दर गुमटियों से सुसज्जित किया गया है।

२—ठहरने का प्रबन्ध

पहले जहां पर एक भी कमरा नहीं था अब वहां नौ पक्के कमरों का निर्माण हो चुका है। रसोई के लिए एक बड़ा भण्डार गृह भी बनाया गया है। पानी के लिए ट्यूबवेल, नहाने के लिये स्नान गृह शौच इत्यादि के लिए फलश शौचालयों का निर्माण किया गया है। सुरक्षा के लिए आश्रम के चारों ओर दीवार बनाई गई है।

३—भूमि

आश्रम के चारों ओर लगभग २०० बीघे भूमि ट्रस्ट के नाम एलाट हो चुकी है। सुन्दर वाटिका का निर्माण किया गया है, जिसमें लगभग ३०० पेड़ फलों के लगाए गए हैं। दो—तीन वर्ष पश्चात् एक सुन्दर बगीचा तैयार हो जाएगा, जिससे आश्रम की शोभा बढ़ेगी और इन छायादार पेड़ों की छाया में सुन्दर साथ वन उपवन का आनन्द ले सकेगा।

४—स्वरूप साहब का प्रकाशन

हमारे समाज में वाणी अध्ययन के लिए स्वरूप साहब का बहुत अभाव था, इस कमी को दूर करने के लिए ट्रस्ट ने स्वरूप साहब का प्रकाशन बहुत बढ़िया कागज पर सुन्दर छपाई में किया तथा १००० स्वरूप साहब की प्रतियां बनवाकर सारे भारतवर्ष के सुन्दर साथ तक पहुँचाई ताकि सुन्दर साथ वाणी का अध्ययन कर सके।

५—विद्यालय

ट्रस्ट के संरक्षण में श्री प्राणनाथ

Nijanand App

जूनियर हाई स्कूल के नाम से चोली में एक विद्यालय चल रहा है, जिसको एक आदर्श स्कूल बनाने के पूरे प्रयास किए जा रहे हैं। पिछले तीन वर्षों से विद्यालय का परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। इस समय विद्यालय में लगभग १६० विद्यार्थी हैं। विद्यालय को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो चुकी है। विद्यालय में गरीब तथा असहाय बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा तथा मुफ्त पाठन सामग्री देने का भी प्रबन्ध है।

६—धाम दर्शन पत्रिका

सुन्दर साथ के दुःख सुख के समाचार, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष, अपनी मौलिक तथा आसान भाषा में धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने तथा वाणी के प्रचार का लक्ष्य लेकर "धाम दर्शन" नाम की पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया गया है जो कि अभी तो त्रैमासिक छपती है परन्तु शीघ्र ही इसको मासिक करने का प्रस्ताव है।

यह हैं श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट (रजि०) इन्चोली की कुछ उपलब्धियां इस थोड़े से समय में जिनका ऊपर जिकर किया गया है परन्तु इस सारे कार्यों का मुख्य श्रेय है पूज्य भाई श्री जगदीशचन्द्र जी आहूजा को जिन्होंने पिछले सात वर्षों तक अथक परिश्रम कर, रात दिन एक कर, अपने शारीरिक स्वास्थ्य की भी चिन्ता नहीं की, इन कार्यों को पूरा करने में अपना जीवन लगा दिया जिसके लिए ट्रस्ट समाज एवं सुन्दर साथ उनका आभारी है। ट्रस्ट के समस्त सदस्य अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहते हैं और अपनी बैठकों में समस्त विषयों पर समीक्षा करते हुए परस्पर विचार विमर्श से ही भावी नीतियों एवं योजनाओं पर निर्णय लेते है। ट्रस्ट की मीटिंगों में जिस ढंग से साहसपूर्ण समीक्षा की जाती है इससे प्रजातांत्रिक प्रणाली को बल मिलता है और संविधान एवं नियमों के अनुसार ही समस्त निर्णयों और योजनाओं पर अमल करने के लिए कार्यकारिणी को उचित निर्देश दिए जाते हैं।

सुन्दर साथ जी, अभी हमें बहुत कुछ करना है जिसके लिए हम प्रयत्नशील हैं और आपको विश्वास दिलाते हैं कि यदि सुन्दर साथ का प्यार और सहयोग इसी प्रकार मिलता रहा तो हम श्री राज जी महाराज की कृपा तथा सतगुरु महाराज जी के आशीर्वाद से, सुन्दर साथ की अधिक से अधिक सेवा करते रहेंगे।

Nijanand App